Series BRH/1

कोड नं.
Code No. 3/1/1

रोल नं.
Roll No.

परीक्षार्थी कोड को उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अवश्य लिखें।

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न पत्र में मुद्रित पृष्ठ 16 हैं।
- प्रश्न पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में 36 प्रश्न हैं।
- कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, उसका क्रमांक अवश्य लिखें।
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है। प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जाएगा। 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि में मुख्य उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे।

संकलित परीक्षा-II

SUMMATIVE ASSESSMENT-II

हिन्दी

HINDI

(पाठ्यक्रम अ)

(Course A)

निर्धारित समय : 3 घण्टे] [अधिकतम अंक : 80

Time allowed : 3 hours] [*Maximum marks : 80*

निर्देश :

(i) इस प्रश्न पत्र के चार खण्ड हैं क, ख, ग और घ।

(ii) सभी खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

(iii) यथासंभव प्रत्येक खण्ड के उत्तर क्रमशः दीजिए।

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सर्वाधिक उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए। 1×5=5

भारत के ऋषि मुनि मानते थे कि प्रकृति मोक्ष का कारण है और पर्यावरण के समृद्ध और स्वस्थ होने से ही हमारा जीवन भी समृद्ध और सुखी होगा है। वे प्रकृति की दैवी शक्ति के रूप में उपासना करते थे और उसे 'पर्यावरणी' भी कहते थे। उन्होंने पर्यावरण पर बहुत गहरा चिंतन किया। जो कुछ पर्यावरण के लिए हानिकारक था, उसे आसुरी प्रवृत्ति कहा और जो हितकर था उसे दैवी प्रवृत्ति माना।

भारत के पुराने ग्रंथों में वृक्षों और वनों का विधान पृथ्वी के रक्षक कवचों के रूप में किया गया है। उनको मंदिर की तरह पूजा जाता था और हरे-भरे पेड़ों को अपने किसी स्वार्थ के लिए काटना पाप समझा जाता था। अनावश्यक रूप से पेड़ों को काटने पर दंड का विधान भी था।

स्पष्ट यह दिखाई देता है कि हमारा प्राकृतिक संतुलन पर केवल उसी का अधिकार है। हम चाहे इसका दोहन करें। इसी भोगवादी प्रवृत्ति के कारण मानव ने इतना कुछ हड़प लिया है कि अब उसका अस्तित्व ही संकट में पड़ गया है। वैज्ञानिक बार-बार चेतावनी दे रहे हैं कि प्रकृति और पर्यावरण की रक्षा करो, अन्यथा मानव जाति नहीं बच पाएगी। भारतीय संस्कृति में वृक्षों की रक्षा के महत्व को 'तुलसी' और 'पीपल' के उदाहरणों से समझा जा सकता है। इन जीवनोपयोगी वृक्षों को देवी-देवता के समान ही पूजा की जाती है। पर्यावरण की दृष्टि से इनका बड़ा गहरा और सीधा संबंध है। यह हमें अमृत प्रदान करता है, दूषित वायु को स्वयं ग्रहण करके हमें प्राणवायु देता है, पर्यावरण का नियंत्रक होता है, नदियों की बाढ़ को रोकता है और जलवायु को स्वच्छ बनाता है। इसलिए हमें वृक्षों के होकर जीवन-यापन करना चाहिए।

(i) भारत के ऋषि-मुनियों ने अनुसार जीवन की समृद्धि आधारित है,

(क) प्रकृति के संरक्षण पर

(ख) पर्यावरण की समृद्धि पर

(ग) अपार धन-संग्रह पर

(घ) असीमित ज्ञान-भण्डार पर

(ii) गद्यांश में 'आसुरी प्रवृत्ति' का आशय है:

(क) ज्ञान की उन्नति (ख) मानवता की विनाशक उन्नति

(ग) मनोरंजन के लिए अतिरेकी प्रवृत्ति (घ) शान्तिप्रिय उन्नति

(iii) वर्तमान उन्नयन का कारण है कि मनुष्य:

(क) प्रकृति पर अपना एकाधिकार चाहता है

(ख) प्रकृति के दोहन के लिए प्रयास करता है

(ग) जीवन की सुरक्षात्मकता के लिए आतुर हो जाता है

(घ) प्रकृति के अन्वेषण का प्रयास नहीं करता

(iv) वृक्ष को रक्षा सिद्ध जानने का कारण नहीं है:

(क) छाया और फल देना

(ख) मनोरंजन को दूर करना

(ग) दूषित वायु को हटाकर प्राणवायु देना

(घ) मनुष्य को पक्षियों से मिलाना करना

(v) तुलसी और पीपल का उदाहरण देकर लेखक क्या बताना चाहता है:

(क) ये जीवनदायिनी ऊर्जा दूर करती हैं

(ख) उपयोगी कार्यकर्ता को सेवा पाना अधिकार है

(ग) पीपल छायादार वृक्ष है

(घ) इन्हें कट ही नहीं जाना चाहिए

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए: 1×5=5

प्रकृति ने मानव जीवन को बहुत सरल बनाया है, किन्तु आज का मानव अपने जीवन-काल में ही पूरी दुनिया की सुख-समृद्धि बटोर लेने के प्रयास में उसको जटिल बनाता जा रहा है। इस जटिलता के कारण संसार में अनेक विपत्ति, असन्तोष और दुःख, अशान्ति-निराशा सभी सुख-शांति की चाह तो रखते हैं, किन्तु राह पकड़ते हैं आह भरने की। एक-पारिवारिक के

विज्ञान में चल की, यथपरंतु आग में इंधनता की तरह दहते हैं। विद्वानों का विचार है कि संसार में मुख्य तीन मार्ग हैं – आत्मसंयम। किन्तु मानव इन मार्गों को भौतिक कामनाओं पदार्थों के, इन्द्रिय विषयों की प्राप्ति में आनंद ढूँढ रहा है। मानव सदा दुख के सागर में डूबता जा रहा है। आत्मसंयम का मार्ग अपने में कष्ट साध्य है, उसकी उपादेयता किसी भी काल में कम नहीं होती। इन्द्रिय निग्रहों का संयम ही आत्मसंयम है भौतिक पदार्थों के प्रति इन्द्रियों का प्रबल आकर्षण मानवीय दुखों का मूल कारण माना गया है। उपभोक्तावादी संस्कृति के फैलाव से यह आकर्षण बीज के विस्तार होता जा रहा है। ऐसी स्थिति में यह जानना आवश्यक है कि वे भौतिक पदार्थ कौन से हैं जिनसे, आनंद कहाँ आनंद का विषय से आत्मसंयम से छूटता है। उसकी विधान अभिव्यंजनाएं और अनुभव होती है। इस विषय के अनुसार धन-सम्पत्ति, वस्त्र, सौन्दर्य का मुख, शरीर के अंदर पानी जैसा लगने लगता है।

(i) आज का आदमी जीवन को अधिक जटिल कैसे बना रहा है:

(क) सुख-शांति की प्राप्ति के प्रयास में

(ख) आज घर बिगाने की कोशिश में

(ग) दुनिया की सुख-समृद्धि को बढ़ाने की कोशिश में

(घ) अभिनेत्री सौन्दर्यों को दूर करने की दौड़ में

(ii) 'मन-मस्तिष्क के विज्ञान में जल की तरह' का अभिप्राय है:

(क) भौतिक पदार्थों में सुख आदि प्राप्त करना

(ख) उपभोक्तावादी संस्कृति के वातावरण में उत्पाद की बातें करना

(ग) यथपरंतु आग में इंधनता की तरह देखना

(घ) चमड़ीवाला की दुनिया में शोर-शिलाक के सपने देखना

(iii) 'आत्मसंयम' का तात्पर्य है:

(क) अपनी आत्मा पर नियंत्रण

(ख) अपनी आवश्यकताओं का नियमन

(ग) अपने मन का दमन

(घ) इन्द्रियों के विषयों के प्रति आकर्षण का संवरण

(iv) पद्यांश के अनुसार पौधे क्या करते हैं :

(क) सुख दे सकते हैं

(ख) आनंद दे सकते हैं

(ग) न सुख दे सकते हैं, न आनंद

(घ) सुख दे सकते हैं, आनंद नहीं

(v) 'अखिल' शब्द का अर्थ नहीं है :

(क) कठिन (ख) गंभीर

(ग) उलझा हुआ (घ) पीला

3. निम्नलिखित व्याख्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : 1×5=5

हरा-हरा यह पात उगाती है
पत्तरों की लहलहरी है
पत्तों में भरते रंग
पेड़ को बात-बेबात नया करती
पने पने में दे हिला प्राण
अपना देह ही खाद बनाती है
धरती – इसीलिए माँ कहलाती है

पानी के भण्डारों में सब
नदियाँ, पोखर, झरने और समन्दर
ज्वालामुखी इलाकों के भी
सोते धरती के अन्दर !

पैसा सूरज तारा आसमान में
धरती के भीतर भी रहता है
गोद में लेकिन सबको
एक बुलाती है
धरती – इसीलिए माँ कहलाती है।

आग-पानी को सिखाती साथ रहना
यह बीज सीखता इस जग उगना,

एक हाथ गमछे उठाकर
मस्तक पर चुहचुहाती है
दूसरा हाथ सृजन का
स्वेद-आप्लावित का
अन्नदा का पाठ पढ़ाती है
धरती – इतिहास माँ कहलाती है।

(i) धरती-पुत्र को क्या-क्या बनाए रखने के लिए धरती:

(क) सूर्य से सूप लेती है

(ख) बादलों से सिंचाई करवाती है

(ग) अपनी देह की खाद बनाती है

(घ) सबके स्वास्थ्य का ध्यान रखती है

(ii) धरती माँ पढ़कर विशेष श्रम करने वालों को एक साथ रहना कैसे सिखाती है?

(क) सब्जियाँ, पौधा, खाद आदि के द्वारा

(ख) ज्वालामुखी के स्थान से गरमी कम करके

(ग) उन्हें खाने-पीने का अच्छा बनाती है

(घ) विरोधियों को संतान के समान गोद में खिलाती है

(iii) धरती माँ सर्दी के लिए खाने की व्यवस्था कैसे करती है?

(क) खेतों को ओलों से पाटकर

(ख) फसलें उगाकर

(ग) ठंडे-बर्फ की गर्मी से

(घ) अपने देह की खाद से

(iv) कविता में 'सृजन' शब्द का आशय है:

(क) निर्माण (ख) रचना

(ग) सृष्टि (घ) फसलें

(v) 'सूरज' का पर्यायवाची नहीं है:

(क) दिनकर (ख) निशाकर

(ग) रविकर (घ) प्रभाकर

4. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए: 1×5=5

जोहि-जोहि ऊ-सुख से मारा! सेंक सब सतवे अभिमन्यु-
राग-साग कस राते रमन कर, हाँ-हूँ हुआ-हैरा करन मन
या ने लखन मन धुआ दिल की अरे सेहत में बीत दिन
जोहि-जोहि ऊ-सुख से मारा! सेंक सुख करते अभिमन्यु।
स्वर्ग बने स्कूलों की संस्कृति और आरंभित हो यह संस्कृति,
सभी चढ़ें सोपान उन्नति के कहीं न हो जीवन की दुर्गति,
सब के सुख में व्यक्ति सुखी हो, नहीं न हो बल का दुरुपयोग।
जोहि-जोहि ऊ-सुख से मारा! सेंक सब करते अभिमन्यु।

(i) कवि किनसे विनाश की कामना कर रहा है?

(क) नर, गोह एवं लोग।

(ख) रण, वैर एवं विवाद।

(ग) क्रोध, अत्याचार एवं आतंक।

(घ) पाखण्ड, झूठ एवं पाप।

(ii) कवि विश्व में किस व्यक्ति की कामना कर रहा है?

(क) ज्ञान और अध्यात्म की। (ख) सामर्थ्यवान शक्ति की।

(ग) अर्थ, बिल, धन की। (घ) सामाजिक व्यक्तियों के विकास की।

(iii) 'कभी भी कोई दुखी न हो' कामना का भाव किस पंक्ति में निहित है:

(क) 'सबके सुख में व्यक्ति सुखी हो'।

(ख) 'सभी चढ़ें सोपान प्रगति के'।

(ग) 'पाप-ताप सब आतप-शमन का'

(घ) 'कहीं न हो जन का दुख क्रंदन'।

(v) 'सबके सुख में व्यक्ति सुखी है' – पंक्ति का आशय है:

(क) संसार में सभी प्राणी सुखी हों।

(ख) चिंतन में मानवता की ज्योति जगे।

(ग) व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के सुख में विकल हो जाए।

(घ) प्रत्येक व्यक्ति दूसरों के दुख को अपना दुख माने।

(vi) 'दर्प-दुख-दुख-दैन्य' में अलंकार है:

(क) यमक (ख) श्लेष

(ग) उपमा (घ) अनुप्रास

खण्ड – ख

5. (i) 'जो लोग पढ़ने के इच्छुक हैं, उन्हें वहाँ सभी सुविधाएँ उपलब्ध हैं।' सामान्य वाक्य में बदलिए: 1

(क) पढ़ने के इच्छुक लोगों को वहाँ सभी सुविधाएँ उपलब्ध हैं

(ख) पढ़ने वाले को वहाँ सभी सुविधाएँ मिलती हैं।

(ग) पढ़ने वाले वहाँ सभी सुविधाएँ पा सकते हैं

(घ) पढ़ने वाले वहाँ सभी सुविधाएँ पाते हैं।

(ii) संयुक्त वाक्य का सही भेदनिर्णय: 1

(क) तुम्हारा अभिमान गरुड़ध्वज का विनाश करेगा।

(ख) आप सच कुछ बोलिए किन्तु अच्छी तरह सोच लीजिए।

(ग) वह ज्यों ही घर से निकला त्यों ही वर्षा होने लगी।

(घ) तुम जहाँ रहते थे, वहीं जाओ।

(iii) मिश्र वाक्य छाँटिए: 1

(क) तुम या तो मेरी बात मानो या यहाँ से चले जाओ।

(ख) वह पुस्तक लिखी है इसलिए पुरस्कार मिला है

(ग) मेरी राय है कि सभी संस्थाएँ बंद कर देनी चाहिए।

(घ) बहुत प्रयासों के बाद उसको वह पुस्तक मिली।

(iv) 'जल्दी दादी घर में आना माँ से मिलकर चली गई' - वाक्य का शिष्ट वाक्य का रूप होगा: 1

(अ) उसकी दादी घर में आई और माँ से मिलकर चली गई।

(ब) जैसे ही दादी घर में आई वैसे ही माँ से मिलकर चली गई।

(स) दादी घर में आते ही माँ से मिली और चली गई।

(द) दादी घर में आकर माँ से मिलकर चली गई।

6. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों के रूप-परिवर्तन के लिए दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए: 1×4=4

(i) उसका <u>एकलखी</u> अंदाज लेखक को प्रभावित न कर सका।

(अ) विशेषण, सार्वनामिक, पुल्लिंग, एकवचन।

(ब) विशेषण, परिमाणवाचक, पुल्लिंग, एकवचन।

(स) विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिंग, एकवचन।

(द) विशेषण, संख्यावाचक, पुल्लिंग, एकवचन

(ii) हमें प्राकृतिक दृश्यों से <u>प्रेम</u>।

(अ) अव्ययीभाव, सामान्य भूतकाल, पुल्लिंग, एकवचन।

(ब) अकर्मक क्रिया, पूर्ण भूतकाल, पुल्लिंग, बहुवचन।

(स) सकर्मक क्रिया, सामान्य भूतकाल, पुल्लिंग, एकवचन।

(द) तिष्यार्थक क्रिया, अपूर्ण भूतकाल, पुल्लिंग, एकवचन।

(iii) 'कहाँ <u>अरे</u> को नहीं तलाक से पाड़ फेंक दिया'।

(अ) क्रियाविशेषण, कालवाचक, 'फेंक दिया' का विशेषण।

(ब) क्रियाविशेषण, रीतिवाचक, 'फेंक दिया' का विशेषण।

(स) क्रियाविशेषण, स्थानवाचक, 'फेंक दिया' का विशेषण।

(द) क्रियाविशेषण, परिमाणवाचक, 'फेंक दिया' का विशेषण।

(v) 'तू' यहाँ क्यों खड़ा है?

(क) सर्वनाम, पुल्लिंगवाचक, मध्यम पुरुष, पुंल्लिंग, अन्यपुरुष।

(ख) निश्चयवाचक, सर्वनाम, मध्यम पुरुष, पुंल्लिंग, एकवचन।

(ग) सर्वनाम, साभिप्रायवाचक, प्रथम पुरुष, पुंल्लिंग, एकवचन।

(घ) सर्वनाम, उत्तमपुरुषवाचक, प्रथम पुरुष, पुंल्लिंग, एकवचन।

7. (i) भावशब्द कहते हैं:

(क) जहाँ क्रिया का मुख्य विषय कर्ता होता है

(ख) जहाँ क्रिया का मुख्य विषय कर्म होता है।

(ग) जहाँ क्रिया का मुख्य विषय स्थिर होती है।

(घ) जहाँ क्रिया का मुख्य विषय कर्ता या कर्म से भिन्न होता है।

(ii) निम्नलिखित में कर्मवाच्य वाला वाक्य छाँटिए: 1

(क) उसकी घुड़सवार ट्रेनिंग हो गई।

(ख) बातचीत तो पिताजी ने शुरू की थी।

(ग) दुल्हनें आई मुनी जाएँगी।

(घ) नहाइए, नहाया जाय।

(iii) निम्नलिखित में कर्मवाच्य वाला वाक्य छाँटिए: 1

(क) सुशीला ने खाना खाया थी।

(ख) मैं अकेला और असुरक्षित हो गया हूँ।

(ग) सही सभा द्वारा दुःखती प्रस्ताव की गई।

(घ) अब उससे चला नहीं जाता।

(iv) निम्नलिखित में भावकर्मवाच्य वाला वाक्य कौन-सा है? 1

(क) हाथों द्वारा जो सफल लड़ाए गए थे उनका उत्तर दे दिया गया है।

(ख) यहाँ धूम्रपान न किया जाय।

(ग) मैंने ध्यानपूर्वक पढ़ाई कर ली है।

(घ) ये केवल आदेश ही नहीं दिए थे, पढ़ाये भी थे।

8. (i) 'छिः ! तुमने तो फूल पर कलंक लगा दिया' । रेखांकित शब्द है: 1

(क) अव्यय, विस्मयादिबोधक।

(ख) अव्यय, क्रियाविशेषण।

(ग) अव्यय, शोकसूचक

(घ) अव्यय, घृणासूचक।

(ii) नीचे लिखे वाक्यों में भाववाच्य बताइए: 1

(क) उसकी आर्थिक स्थिति सुधर रही है।

(ख) दुर्घटना बुरा लगने वाली थी।

(ग) आओ, पार्क में बैठा जाए।

(घ) आज मन का दुःखड़ा रोया जाए।

(iii) निम्नलिखित वाक्यों में भिन्नवाच्य छाँटिए: 1

(क) यह प्रश्न जटिल है किन्तु तुम्हें सरल लगता है।

(ख) वह दुःखी भी है और दुखी भी है।

(ग) आज एक विचित्र घटना हो गई है।

(घ) लेखक उस आश्चर्यजनक स्थिति को पहचानता है जिसको जानने योग्य है।

(iv) 'हमारे देश भारत की नारियाँ' में अलंकार है: 1

(क) यमक (ख) श्लेष

(ग) मानवीकरण (घ) अनुप्रास

9. (i) किस अलंकार में उपमेय को उपमान से उपमा दी जाती है? 1

(क) श्लेष (ख) यमक

(ग) रूपक (घ) अनुप्रास

(ii) निम्नलिखित में उत्प्रेक्षा अलंकार का उदाहरण छाँटिए: 1

(क) कल्पलता-सी अतिशय कोमल।

(ख) जनक-जनक के सौतुल माड़ला आकिलाए।

(ग) चरणकमल कहीं डोलई।

(घ) लम्बा होता जाए या वृक्ष में कुछ अन्तर दल को

(iii) 'नयन तेरे मीन-से हैं' में अलंकार है: 1

(क) रूपक

(ख) यमक

(ग) गीत

(घ) श्लेष

(iv) निम्नलिखित में मानवीकरण अलंकार को चुनिए: 1

(क) मुदित मुकुल-सा मंजु मनोहर।

(ख) कोटि-कुलिस-सम वचन तुम्हारा।

(ग) भव-कानन में घूमता-फिरता हूँ स्वच्छन्द।

(घ) पकी लोटी है गेरी गोद-व्यथा।

खण्ड – ग

10. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और पूछे गये प्रश्नों के सही उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए: 1×5=5

इनमें भाइयों के साथ पिट्ठू-दड़ा भी खेला और पतंग उड़ाई, लेकिन घोड़ा बनने का काम भी किया. लेकिन उनकी गतिविधियों का दायरा घर के बाहर ही अधिक रहता था और उसकी सीमा भी पास की. इसका कारण यह कि तब हमारे घर की दीवारें घर तक ही सीमित नहीं हो जाती थीं बल्कि पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थीं. इसलिए मोहल्ले के लिहाज से घर में जाने पर कोई पाबन्दी नहीं थी बल्कि कुछ घर तो मेरे अपने घर के हिस्से ही थे. आज तो मुझे बड़ी सिहरन के साथ यह महसूस होता है कि अपनी जिन्दगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने बड़ी-बड़ी के बचपन से कितनी चीजों को छीन लिया है. इस सन्दर्भ में 'पड़ोस कल्चर' से जिन्दगी कितनी रोकटोक, अजनबीपन और अकेलेपन में डाल दिया है.

(i) लेखिका के भाइयों की गतिविधियों का दायरा घर के बाहर था, क्योंकि-

(क) उनकी गतिविधियाँ घर में सम्भव नहीं हो सकती थीं।

(ख) पतंग और पिट्ठू-दड़ा का खेल घर से बाहर का था।

(ग) घर से बाहर उनकी गतिविधियों पर कोई नियंत्रण नहीं था।

(घ) सांस्कृतिक भिन्नता के अनुसार पुरुष को बाहर रहने की स्वतंत्रता थी।

(ii) लेखिका की दृष्टि में ये कथन क्यों थे?

(क) लड़कियाँ प्रायोगिक स्वभाव के कारण घर को दृष्टि में रखती थीं।

(ख) घर से बाहर का वातावरण उनके लिए असुरक्षित था।

(ग) समाज में लड़कियों का बाहर जाना ठीक नहीं माना जाता था।

(घ) पारिवारिक व्यवस्था के अनुसार यही नियम था।

(iii) उस समय में घर की दीवारें इस तरह से तैयार नहीं की जाती थीं जिससे पूरे मोहल्ले में फैली रहती थीं' वाक्य का तात्पर्य है:

(क) घर और मोहल्ले के बीच में कोई विभाजक दीवार नहीं थी।

(ख) पूरा मोहल्ला एक-दूसरे के सुख-दुख का हिस्सेदार था।

(ग) आपसी वैमनस्य के कारण पूरे मोहल्ले में पारिवारिक सामंजस्य था।

(घ) व्यवसायगत 'पड़ोस संस्कृति' मोहल्ले को भी परिवार का सदस्य मानती थी।

(iv) परम्परागत 'पड़ोसकल्चर' से विच्छेदन होने का कारण है:

(क) हम फ्लैटों में रहने लगे हैं।

(ख) पारम्परिक प्रेमभाव क्षीण हो गया है।

(ग) रूमानियत मर गई है।

(घ) हम असहाय, असुरक्षित और संकुचित हो गए हैं।

(v) 'हमने गिल्ली-डंडा भी खेला और पतंग उड़ाने का काम भी किया।' वाक्य का प्रयुक्त है:

(क) सरल वाक्य (ख) मिश्र वाक्य

(ग) संयुक्त वाक्य (घ) दीर्घ वाक्य

अथवा

इस देश की वर्तमान शिक्षा-प्रणाली अच्छी नहीं। इस कारण यदि कोई शिक्षा को पढ़ना अनावश्यक समझे तो उसे उस प्रणाली का समर्थन करना या बताना चाहिए, खुद पढ़ने-लिखने को दोष न देना चाहिए। लड़कों ही की शिक्षा प्रणाली कौन सी बड़ी अच्छी है। प्रणाली बुरी होने के कारण क्या किसी ने यह तय ही है कि सारे स्कूल और कॉलेज बंद कर दिए जाएँ ? आप चुनी हुई लड़कियों और स्त्रियों को शिक्षा की प्रणाली का संशोधन कीजिए। उन्हें क्या पढ़ाना चाहिए, कितना पढ़ाना चाहिए, किस उम्र की शिक्षा देनी चाहिए और कहाँ पर देनी चाहिए - घर में या स्कूल में - इन सब बातों पर बहस कीजिए, किताबें लिखिए, जी

में आए हो सकिए; पर परमेश्वर के लिए यह न कीजिए कि स्त्री पढ़ी-लिखी में कोई दोष है यह अनर्थकर है, यह अधिमान का उत्पादक है, यह दुःख का पात्र करने वाला है। ऐसा कहना सौन्दरी आने मिथ्या है।

(i) कुछ लोगों के अनुसार स्त्री शिक्षा के अनर्थकर होने का एक सम्भावित कारण है:

(क) शिक्षित स्त्री का अकेले होना।

(ख) शिक्षित स्त्री द्वारा पुरुष की नकल करना।

(ग) शिक्षित स्त्री द्वारा परिवार की उपेक्षा करना।

(घ) बेरोजगार शिक्षा प्रणाली।

(ii) यदि देश की शिक्षा-प्रणाली अच्छी न हो तो हमें:

(क) कभी भी पढ़ाना-लिखाना नहीं चाहिए।

(ख) स्कूल कॉलेजों को बंद कर देना चाहिए।

(ग) लड़कियों को घर पर ही पढ़ाना चाहिए।

(घ) शिक्षा प्रणाली में बदलाव लाना चाहिए।

(iii) लेखक ने कितनों 'सोलह आने सिक्का' कहा है?

(क) स्कूल-कॉलेज की शिक्षा को।

(ख) शिक्षा प्रणाली के संशोधन को।

(ग) शुभाकांक्षी के प्रयासों को।

(घ) स्त्री-शिक्षा को अनर्थकर मानने को।

(iv) 'जिला ने यह राय दी कि सारे स्कूल और कॉलेज बंद कर दिए जाएँ' – वाक्य का प्रकार है.

(क) सरल वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य

(ग) मिश्र वाक्य (घ) साधारण वाक्य

(v) 'सोलहों आने' मुहावरे का अर्थ है:

(क) एकदम अंत (ख) पूरा पवित्र

(ग) पूरा सच (घ) प्रतिशोधात्मक

11. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए: 2×5=10

(क) आग की लौ अब बहुत बड़ी लौ क्यों बनी हुई है? इस लौ के नीचे जो रोगी के दुश्मन लोग बचे रह गए?

(ख) मिस्सिप्पी नदी की गहराई की संगतार्थकता का कारण क्यों कहा जाता है?

(ग) इलाहाबादिन, सिविलक, गाधालाशाही और संतुलेख किस भाषा में बने गए?

(घ) 'उस कहानी का मुख्य पात्र' की लेखिका के पिताजी के व्यक्तित्व की चार विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(ङ) 'संकल्प' के विषय में चार पंक्तियाँ लिखिए।

12. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

लक्ष्मन कहेउ मुनि सुजस तुम्हारा। तुम्हहि अछत को बरनै पारा।।
अपने मुह तुम्ह आपनि करनी। बार अनेक भाँति बहु बरनी।।
नहि संतोषु त पुनि कछु कहहू। जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू।।
बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा। गारी देत न पावहु सोभा।।

(क) लक्ष्मण ने परशुराम पर क्या व्यंग्य किया? 2

(ख) लक्ष्मण के व्यंग्यपूर्ण शब्दों से परशुराम के व्यक्तित्व की कौन सी विशेषताएँ अभिव्यक्त हुई हैं? 2

(ग) परशुराम द्वारा गाली देना उनके शोभा क्यों नहीं देता? 1

अथवा

मैं जैसा कहता हूँ मैं करो,

अपनी जेबों पर मत रीझो।

आज रोटियाँ जेबों के लिए हैं

जनता के लिए नहीं

जब और आनुपात सार्वजनिक प्रश्नों की तरह

शोषण है सभी जीवन के

(घ) [illegible] 1

(ङ) 'आग रोटियाँ सेंकने के लिए है जलने के लिए नहीं' व्याख्या कीजिए। 2

(च) माँ चाँदी के [illegible] 2

13. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 5

(क) 'हाल ही में हुआ' कविता में दुख के कारण क्या बताए गए हैं? 2

(ख) लड़की की मुस्कुराहट मुस्कान कवि के मन पर क्या प्रभाव छोड़ती है? 1

(ग) संगतकार किसे कहते हैं? यह मुख्य गायक की किन-किन रूपों में मदद करता है? 2

14. 'मैं क्यों लिखता हूँ' उस पर लेखक ने क्या तर्क दिया है? पाठ के आधार पर तर्क दीजिए। 3

अथवा

दुनारी का दुनू से पहली बार परिचय कहाँ और किस रूप में हुआ? 3

खण्ड – घ

15. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर विचार-बिन्दुओं के आधार पर निबंध लिखिए। 5

(क) बदलता हुआ यातायात

• यातायात का जीवन में महत्व, • बढ़ते हुए साधन, • साधनों के उपयोग, • लाभ-हानि।

(ख) अपनी भाषा

• अपनी भाषा का महत्व, • सामाजिक व्यवहार में उसकी उपयोगिता, • अपनी भाषा की सेवा और विकास के उपाय

16. आप अपने पड़ोस वाली एक महिला को एक लिफाफा उसके स्वास्थ्य की जानकारी प्राप्त कीजिए और उसे उसके पते के मुख्य उपयोगी सुझाव दीजिए। 5

अथवा

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के उपाधान चिन्ह के सर्वेक्षण को एक लिफाफा अंकित हुए उपस्थित सुझावों में से किन्हीं पाँच में अनुपालन के प्रति अपना मत प्रकट कीजिए।